



प्रेस विज्ञप्ति / Press Release

18 दिसम्बर / December, 2019

सिडबी की मान्यता - निवेशक वर्ग के विस्तार के चलते उद्यम पूंजी उद्योग वृद्धि की ओर अग्रसर

SIDBI believes Venture Capital industry poised for growth with expansion of investor class

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र के संवर्द्धन, वित्तपोषण और विकास में संलग्न शीर्ष संस्था भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने अपने विश्व बैंक समूह कार्यक्रम के अंतर्गत, क्षेत्रों की दशा के बारे में “भारत में निजी निवेश - उद्यम पूंजी केन्द्रित” रिपोर्ट जारी की है। यह रिपोर्ट इस बात को रेखांकित करती है कि दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने के बावजूद भारत में हुए उद्यम पूंजी आस्ति श्रेणी में निवेश भारत में हुए निजी निवेश का अत्यल्प 17 प्रतिशत हिस्सा है और पिछले कुछ वर्षों के दौरान इसमें पूंजी का प्रवाह कम हुआ है। हालांकि, सिडबी का मानना है कि निवेशक वर्ग के विस्तार और उद्यमिता को मिल रहे प्रोत्साहन के चलते उद्यम पूंजी उद्योग वृद्धि की ओर अग्रसर है।

Small Industries Development Bank of India (SIDBI), the apex financial institution engaged in the promotion, financing and development of Micro, Small & Medium Enterprises (MSMEs), under its World Bank group programme, released the State of Sector report: “Private Investing in India – Venture Capital Focus” which highlights that despite India being one of the fastest growing economies of the world, the Venture Capital (VC) asset class holds a meagre 17 per cent share of private investments in India and has witnessed low capital flows in the past few years. However, SIDBI believes that the VC industry is poised for growth with expansion of investor class and incentives to promote entrepreneurship.

उद्यम पूंजी व्यवसायी, स्टार्ट-अप और आरंभिक चरण की संवृद्धिशील कंपनियों में निवेश करने वाले निवेशक हैं। यद्यपि, भारत में स्टार्ट-अप का पारितंत्र यथेष्ट रूप से अनुकूल रहा है, परवर्ती चरणों में उद्यम पूंजी का निवेश सुस्थापित ट्रैक-रिकॉर्ड वाले अपेक्षाकृत बड़े फंडों अथवा छोटे आरंभिक (सीड)/ एंजेल चरण के निवेशों पर केंद्रित रहा है। मूल्य शृंखला के इस हिस्से के अंतर्गत फंडों की सीमित संख्या और सीमित साझे

दारों की सक्रियता के साथ मध्य-अवस्था के वित्तपोषण में एक अंतराल दिखाई देता है। निवेश निकासी की विषम परिस्थितियों ने भी भारतीय बाजार में निवेशकों के विश्वास को हतोत्साहित किया है।

Venture capitalists are investors investing in start-ups and early stage growth companies. In India though the start-ups environment has been supportive, the VC investments have gone into larger funds focusing on later stages of investment, and with a proven track record, or into funds focused on smaller seed / angel stage investments. A funding gap is observed at the mid stages of investment, with a limited number of funds and Limited Partners (LPs) operating in this part of the value chain. Exit scenarios in the Indian market have also contributed to low confidence among investors.

सिडबी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री मोहम्मद मुस्तफा, आईएस ने कहा, “हमारा मानना है कि निवेशक वर्ग के लिए यह एक अवसर है और पारितंत्र में अधिक घरेलू सीमित साझेदार लाने से उद्योग की वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा। अधिक घरेलू पूंजी लाने के लिए संरचनाएं बनाने और पारितंत्र में विभिन्न निवेशक-वर्गों को शामिल करने से, निधि प्रबन्धकों को स्टार्ट-अप में निवेश करने के लिए आवश्यक निधि उपलब्ध होगी। इसके परिणामस्वरूप अधिक व्यवसायों का विकास होगा और रोजगार सृजन होगा। नेटवर्किंग के माध्यम से सीमित साझेदारों के साथ जुड़ना और जोखिम पूंजी के साथ नए फंड का समर्थन करना, पारितंत्र को विकसित करने के अन्य संभावित तरीके हैं। नकदी निकास के अवसरों में सुधार करना और सीमित साझेदारों और फंड प्रबन्धकों को इस आस्ति वर्ग के बारे में शिक्षित करना ऐसी अन्य पहलकदमियां हैं जिन्हें पारितंत्र को विकसित करने के लिए प्राथमिकता दिए जाने की आवश्यकता है।”

Shri Mohammad Mustafa, IAS, Chairman and Managing Director of SIDBI said, “We believe, an opening up of the investor class and bringing more domestic LPs into the ecosystem will propel industry growth. Creating structures to bring in more domestic capital and involving different investor classes in the ecosystem will provide fund managers with the required funds to invest in start-ups, ultimately leading to the development of more businesses and employment generation. Engaging with LPs through networking events and supporting new funds with risk capital are other potential ways to develop the ecosystem. Improving cash exit opportunities and educating LPs and fund managers about this asset class are other initiatives which need to be taken up on priority, to develop the ecosystem.”

रिपोर्ट की उल्लेखनीय बातें इस प्रकार हैं:

Key highlights of the report are:

- वर्तमान में भारत के पास 195 (भारत में पंजीकृत सभी निधियों का ~55%) सक्रिय निधियाँ हैं (2017 की शुरुआत से भारत में निवेश किया गया)। 3-4 वर्षों में चुनिंदा सौदे करने वाली फर्मों के साथ भारत में उद्यम पूंजी उद्योग बढ़ते हुए चरण से विकासमान चरण की ओर बढ़ रहा है।
- India currently has 195 (~55% of all registered funds in India) active funds (made investments in India since the start of 2017). The VC industry in India has moved from a

scale-up phase to an evolving phase, with firms affecting selective deals over the past 3-4 years.

- सौदों की कुल संख्या 2015 के ~1,600 से घटकर 2018 में ~800 हो गई है जबकि औसत सौदे का आकार 2015 में ~ यूएस डालर 1.5 मिलियन से बढ़कर 2018 में ~ यूएस डालर 2.1 मिलियन (यूएस डालर 20 मिलियन मूल्य तक के सौदे) हो गया है।
- Total number of deals have declined from ~1,600 in 2015 to ~800 in 2018 while the average deal size has increased from ~USD 1.5 million in 2015 to ~USD 2.1 million in 2018 (deals with value up to USD 20 million).
- उपभोक्ता के विवेकाधीन क्षेत्र के आधार पर किए जाने वाले सौदों के मूल्य और प्रमात्रा के मामले में यह सबसे बड़े क्षेत्र के रूप में उभरा है ।
- IT has emerged as the largest sector in terms of deal value and volume followed by consumer discretionary sector.
- ध्यान देने योग्य एक दिलचस्प प्रवृत्ति यह है कि निवेश के बाद के चरणों में विविधीकरण देखा गया है। जबकि एंजेल निधि/ बीज निवेश मुख्य रूप से प्रौद्योगिकी और उपभोक्ता विवेकाधीन पर आधारित हैं, कई स्टार्ट-अप अपेक्षित स्केल प्राप्त न कर सकने के चलते बाद के चरणों में निवेश उगाहने में सक्षम नहीं रह पाते।
- An interesting trend to note is the diversification at later stages of investment. While angel / seed investments primarily go into technology and consumer discretionary, many of the start-ups are not able to achieve scale to raise later stages of investments.
- नवीनतम रुझानों के कई चरणों में निधियाँ पारंपरिक व्यवसायों में अंतरित होती हुई भी देखी गई हैं, जिसके लिए प्रौद्योगिकी एक संबल साबित हुई है। इस प्रकार स्वास्थ्य देखभाल, स्थानीय भाषा और प्राकृतिक भाषा संसाधन और ई-टेलिंग जैसे क्षेत्र सामने आए हैं और उद्यम पूँजी का अधिकांश हिस्सा प्राप्त कर रहे हैं ।
- The latest trends have also seen funds across stages shift towards traditional businesses which have technology as an enabler. Sectors such as healthcare, vernacular and natural language processing and e-tailing have thus come up and are receiving a higher share of VC investment.
- पिछले 10 वर्षों में स्टार्ट-अप की बढ़ती संख्या और एंजेल/ बीज स्तर पर निधियों और निवेशों की बढ़ती संख्या से एंजेल / बीज स्तर के लिए पारितंत्र का विकास हुआ है। तथापि, निवेश के अन्य चरणों के लिए पारितंत्र अभी भी विकासमान अवस्था में है।
- The ecosystem for angel / seed stage has evolved with a growing number of start-ups and an increasing number of funds and investments at the angel / seed stage, over the past 10 years. However, the ecosystem for other stages of investment is still evolving.

सिडबी के बारे में: 1990 में अपने गठन के बाद से सिडबी अपने एकीकृत, अभिनव और समावेशी दृष्टिकोण के माध्यम से समाज के विभिन्न स्तरों पर नागरिकों के जीवन को प्रभावित कर रहा है। सिडबी ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न ऋण और विकासात्मक उपायों के माध्यम से सूक्ष्म और लघु उद्यमियों (एमएसई) के जीवन को छुआ है, चाहे ये पारंपरिक व घरेलू छोटे उद्यमी हों; उद्यमिता पिरामिड के निम्नतम स्तर के उद्यमी हों अथवा उच्चतम स्तर के ज्ञान-आधारित उद्यमी हों। अधिक जानकारी के लिए कृपया वेबसाइट <https://www.sidbi.in> पर जाएँ।

About SIDBI: Since its formation in 1990, SIDBI has been impacting the lives of citizens across various strata of the society through its integrated, innovative and inclusive approach. Be it traditional, domestic small entrepreneurs, bottom-of-the-pyramid entrepreneurs, to high-end knowledge-based entrepreneurs, SIDBI has directly or indirectly touched the lives of Micro and Small Enterprises (MSEs) through various credit and developmental engagements. To know more, check out: <https://www.sidbi.in>

सिडबी फंड ऑफ फंड्स के बारे में: उद्योग का समर्थन करने के लिए सिडबी सदैव एक सक्रिय हितधारक रहा है और विभिन्न फंड ऑफ फंड्स कार्यक्रमों, यथा - ऑल इंडिया फंड्स, रीजनल फंड्स, एमएसएमई-आरसीएफ, इंडिया एस्पिरेशन फंड (आईएएफ), फंड ऑफ फंड्स फॉर स्टार्ट-अप्स (एफएफएस) और एस्पायर फंड (एएफ) का संचालन करता रहा है; जिनमें व्यापार चक्र के विभिन्न चरणों, जैसे आरंभिक(सीड), सीरीज़ 'ए', सीरीज़ 'बी' के अंतर्गत कंपनियों में निवेश के लिए वैकल्पिक निवेश फंड (एआईएफ) में योगदान दिया जाता है। वर्तमान में एफएफएस कार्यक्रम के तहत निधि में योगदान के लिए नए आवेदनों पर विचार किया जा रहा है। अब तक सिडबी ने एफएफएस के तहत सेबी के पास पंजीकृत 47 आल इंडिया फंड (एआईएफ) को 3,123 करोड़ रुपये की वचनबद्धता मंजूर की है। सिडबी के फंड परिचालनों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया <http://www.sidbivcf.in/> पर जाएँ।

About SIDBI Fund of Funds: SIDBI has been an active stakeholder in supporting the industry and has been operating various Fund of Funds programs, namely, All India Funds, Regional Funds, MSME-RCF, India Aspiration Fund (IAF), Fund of Funds for Start-ups (FFS) and ASPIRE Fund (AF) in which contributions are made to Alternative Investment Funds (AIFs) for investments in companies at different stages of business cycles such as seed, Series A, Series B, and so on. Currently, new applications for contributions to Funds are being considered under the FFS programme. Till date, SIDBI has committed Rs 3,123 crores under FFS to 47 AIFs registered with SEBI. For more information on SIDBI's Fund of Fund operations, please visit: <http://www.sidbivcf.in/>

मीडिया संपर्क: नीलाश्री बर्मन, मोबाइल: +91 8879760249, ई मेल: neelasrib@sidbi.in

Media contact: Neelasri Barman, Mobile: +91 8879760249, E-mail: neelasrib@sidbi.in